

शांति

शांति की स्थिति या स्थिति मानव जीवन (व्यक्तिगत और सामाजिक) में एक बहुत व्यापक स्पेक्ट्रम को कवर करती है। यहां हम सभी पहलुओं पर ध्यान नहीं देंगे, बल्कि स्थानीय और वैश्विक दोनों तरह के सामाजिक संबंधों में शांति के विचार और विभिन्न समाधानों तक सीमित रहेंगे

शांति बनाए रखें।

i) सामाजिक सद्भाव के रूप में शांति

शांति की अंतिम धारणा यह दर्शाती है कि प्रत्येक मनुष्य अपने साथ शांति से रहता है, अर्थात् आंतरिक तनावों के बिना। लेकिन व्यक्तियों के लिए आंतरिक शांति सामान्य रूप से सामाजिक या प्राकृतिक क्षेत्र में दूसरों के साथ संबंधों में शांति पर निर्भर होती है, इसी तरह, एक समाज में शांति, बदले में, पड़ोसी समुदायों में और उनके साथ शांति से निर्धारित होती है।

वास्तविक व्यवहार में, न तो कोई व्यक्ति और न ही कोई समाज पूर्ण सद्भाव में रहता है, परस्पर विरोधी भावनाएं और एक या दूसरे प्रकार के अंतर-व्यक्तिगत तनाव लगातार सद्भाव को बिगाड़ते हैं इसलिए, शांति की आकांक्षा एक तरह से अपेक्षा के निचले स्तर पर स्वतः ही आंकी जाती है। इसी कारण से चैतन्य प्रयास द्वारा शांति को बनाए रखने के प्रयासों के बिना सहज प्रसार भी लगभग असंभव है।

ii) अंतर-व्यक्तिगत संघर्ष से बचने के रूप में शांति

इस प्रकार शांति का उद्देश्य संघर्ष की रोकथाम है। संघर्ष को सीमित करने की रणनीतियाँ संघर्ष-समाधान के शांतिपूर्ण तरीकों से लेकर समुदाय की सामूहिक इच्छा के बल प्रयोग तक होती हैं। हम अगले भाग में इस पहलू की जांच करेंगे। यहां 'संघर्ष से बचने' और 'संघर्ष को रोकने' के बीच अंतर करना उपयोगी होगा। दोनों ही मामलों में, निश्चित रूप से बातचीत करने वाले व्यक्तियों के बीच संघर्ष को अपरिहार्य माना जाता है। संघर्ष से बचने के मामले में, जहाँ तक संभव हो संघर्ष के कारणों से बचने का प्रयास किया जाता है। दूसरे मामले में, चूंकि संघर्ष को पूरी तरह से टालना हमेशा संभव नहीं होता है, इसलिए संघर्षों को नियंत्रित या प्रतिबंधित करने की कोशिश की जाती है। इसके

द्वारा एक समाज (छोटा या बड़ा) सामूहिक शक्ति के विभिन्न स्तरों के माध्यम से, बल प्रयोग सहित, संघर्ष के प्रसार को सीमित करने का प्रयास करता है। इस प्रकार, सामाजिक संगठन शांति बनाए रखने की दिशा में सबसे महत्वपूर्ण कदम है।

हम जानते हैं कि सामाजिक संगठन के कई रूप हैं परिवार, समुदाय, वर्ग, जाति, जनजाति अच्छे उदाहरण हैं। इन सभी संगठनों की एक विशेषता यह है कि उनका एक सामान्य कार्य है जो संगठन के भीतर शांति बनाए रखना है। कोई यह भी कह सकता है कि संगठित करना आंतरिक रूप से शांति बनाए रखना है किसी न किसी रूप में, परिवार की संस्था उस कार्य को करती है और इसी तरह अन्य बड़े सामाजिक संस्थान जैसे जनजाति या गांव करते हैं। लेकिन यह महसूस करना भी आवश्यक है कि ये सामाजिक संस्थाएं हमेशा शांति बनाए रखने में सफल नहीं होती हैं। इतना ही नहीं, वे एक-दूसरे के साथ संघर्ष में आ सकते हैं। ऐसी स्थितियों का सामना करने के लिए ही सामाजिक संस्थाओं के उच्च रूपों की उत्पत्ति हुई, उनमें से सर्वोच्च राजनीतिक राज्य है जो व्यापक अधिकार और शक्ति का प्रयोग करता है

शांति के साधन के रूप में राज्य

समाज के व्यवस्थित संगठन के लिए एक ढांचा प्रदान करने के लिए राज्य धीरे-धीरे विकसित हुआ है ये

विचार अलग-अलग हैं कि क्या 'क्रमबद्धता' केवल समाज के एक वर्ग (जैसे अमीर, मजबूत, आदि) के हित में है या समग्र रूप से समाज के सामान्य हित में है, सच्चाई की डिग्री कुछ भी हो सकती है कि ऐसे विरोधी विचार हो सकता है, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि राज्य समाज को एक साथ रखने के लिए एक बाध्यकारी ढांचा प्रदान करता है और यह ढांचा कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए उचित रूप से उचित है

यही कारण है कि राज्य 'कानून' के इर्द-गिर्द काम करते हैं। वास्तव में, राज्य जो कुछ भी करता है वह कानून के माध्यम से करता है, एक प्रसिद्ध संवैधानिक और राजनीतिक सिद्धांतकार लॉर्ड ब्रायस ने राज्य को राजा मिडस के रूप में चित्रित किया, जिसमें वह जो कुछ भी छूता है वह परिवर्तित हो जाता है। कानून राज्य के तीन अंग- विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका- के पास कानून बनाने, कानून लागू करने और कानून की व्याख्या करने वाले कार्य हैं। यह उल्लेख करने की आवश्यकता है कि मानव समाज और राज्य के लंबे इतिहास में तीन अंगों का एक अलग विभाजन हमेशा से नहीं रहा है। ऐसा विभाजन केवल वैचारिक था। केवल आधुनिक समय में ही राजनीतिक दार्शनिकों ने न केवल इन तीन कार्यों की विशेष रूप से पहचान की, बल्कि आगे यह निष्कर्ष निकाला कि राज्य और समाज के बेहतर क्रम के लिए तीन कार्य तीन अलग और विशिष्ट संरचनाओं द्वारा किए जाते हैं।

हमने पहले ही उल्लेख किया है कि राज्य का उद्देश्य समाज को एक साथ रखना है क्योंकि अनुनय की नीतियां, प्रथा और परंपरा की भूमिका और मानव संबंधों में नैतिकता की पकड़ समाज को बनाए रखने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, राज्य बहुत अधिक उन पर निर्भर करता है भूमिका। हालाँकि, यह तब होता है जब तनाव और संघर्ष सामाजिक व्यवस्था को स्पष्ट रूप से खतरे में डालते हैं, वह राज्य जिसे बल के उपयोग का विशेष अधिकार है, समाज की ओर से बल के उपयोग का सहारा लेता है, इस प्रकार, समाज को विनियमित करने में राज्य की भूमिका प्रतीत होती है शांति को बढ़ावा देने में इतना नहीं जितना कि संघर्ष को रोकने के साथ।

निम्नलिखित डिवाइस संघर्ष को रोकने के कार्य को पूरा करते हैं।

1) कानूनों, नियमों और विनियमों के ढांचे को पारित करके। ये कानून और नियम यह सुनिश्चित करने के लिए व्यक्तियों और समूहों के कार्यों की सीमा निर्धारित करने का प्रयास करते हैं कि इस तरह के कार्यों से सामाजिक शांति भंग न हो

2) उपर्युक्त कानूनों और विनियमों को निष्पादित करने के लिए प्रशासनिक तंत्र के एक विशाल नेटवर्क की स्थापना द्वारा कार्यकारी शाखा के बीच प्रमुख पुलिस शाखा है, जिसे समाज में अपराध को नियंत्रित करने और पकड़ने के लिए सौंपा गया है। यह हर जगह अच्छी तरह से मान्यता प्राप्त है कि अपराध शांति के लिए अशांति का सबसे स्पष्ट और दृश्यमान अभिव्यक्ति है इसलिए अपराध की रोकथाम को किसी भी समाज में न्यूनतम शांति बनाए रखने के रूप में मान्यता प्राप्त है प्रशासनिक नेटवर्क की अन्य शाखाएं अन्य कानूनों के अवलोकन को लागू, निगरानी और निगरानी करती हैं और नियम।